किसानों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु उपयोगी ईख उत्पादन की नवीनतम तकनीक

अजीत कुमार[1], सी० के० झा[1], शिवपुजन सिंह[1] एवं कुमारी सुनीता[2]
[1]सहायक प्राध्यापक सह वैज्ञानिक, ईख अनुसंधान संस्थान, रा.प्र. के.कृ.वि.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, माधोपुर, पश्चिम चम्पारण, बिहार

ईख बिहार की एक प्रमुख नकदी फसल है तथा चीनी उद्योग कृषि पर आधारित एक मात्र उद्योग है। किसान भाईयों को यह ध्यान रखना चाहिए कि गन्ने की फसल लगाने से खेत एक साल के लिए व्यस्त हो जाता है और एक साल बाद मिलने वाला गन्ना का उत्पादन ही आपकी असल पूँजी होती है। अतः गन्ने की खेती निम्नलिखित तकनीक से करें ताकि ईख की खेती से अधिक से अधिक उपज प्राप्त कर सके।

रोप का समयः

तापक्रम के आधार पर इसके लिए रोप का दो समय है।

क. शरद रोप : अक्टूबर से मध्य नवंबर तक

ख. बसंत रोप : फरवरी से मार्च

मार्च में ईख रोप के समय अगर खेत में नमी का अभाव हो तो पहले हल्की सिंचाई कर खेत की तैयारी करें। शरद रोप की उपज बसंत रोप की तुलना में करीब 20–25 प्रतिशत अधिक होती है।

मिट्टी की तैयारीः

ईख हर तरह की मिट्टी में उगाई ज ा सकती है। दोमट मिट्टी एवं उँची जमीन इसके लिए अधिक उपर्युक्त है। मिट्टी पलट हल या प्लाऊ द्वारा खेत की गहरी जुताई करें व अच्छी प्रकार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें। उसके बाद 2–3 बार देशी हल या टैक्टर चालित डिस्क हैरे से जुताई कर पाटा देना चाहिए ताकि खेत समतल हो जाए तथा नमी बनी रहे। खेत में जल निकासी की समुचित व्यवस्था रहनी चाहिए।

उन्नतशील अनुशंसित प्रभेदः

अनुशंसित प्रभेद के स्वस्थ एवं निरोग बीज का दो आँख वाली गुल्ली का ही रोपनी करनी चाहिए। प्रमुख प्रभेदों यथा – COP-2061, COP-112, राजेन्द्र गन्ना–1 (COP-16437), CO-0238, CO-0118, COLK-94184 COJ-85 की बुआई करें तथा अधिकतम उत्पादन व लाभ अर्जित करें।

जल जमाव वाले प्रभेद

जल जमाव वाले क्षेत्रों में प्रभेद बी0ओ0 91 एवं सी. मित जल जमाव वाले क्षेत्रों में बी0ओ0 110, बी0ओ0 137, बी0 ओ0 147 एवं सी0ओ0पी0 9702 की रोपनी करनी चाहिऐं।

बीज का चुनावः

अनुशंसित प्रभेद के बीज, कीट एवं रोग व्याधि से मुक्त, लेना चाहिए। पौधे के उपरी दो तिहाई हिस्से को ही बीज के रूप में प्रयोग करना चाहिए। यथा संभव 9–10 महीने के फसल को ही बीज के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए।

बीज दरः

सिराउर एवं ट्रेंच विधि में 50–60 क्विंटल/हे0 तीन आँख वाली 42000–45000 गुल्लियाँ तथा जोड़ी पंक्ति विधि में 60,000–65,000 तीन आँख वाली गुल्लियाँ लगती है। जिसका वजन लगभग 70–80 क्विंटल/हे0 होता है।

बीजोपचारः

टुकड़ा काटते समय ध्यान रहे कि उपर वाली आँख के उपर का पोड़ एक तिहाई हिस्सा हो और नीचे वाली आँख के नीचे दो तिहाई। बीज को बाविस्टिन या रोको 2 ग्राम तथा इमिडासेल 1 मिली0ली0 दवा का प्रति लीटर पानी में घोल बना. कर गुल्लियों को 30 मिनट तक उपचारित करें।

खाद एवं उर्वरकः

खेत में 200 क्विंटल कम्पोस्ट या गंधकीय प्रेसमड़ प्रति हेक्टेयर डालकर जुताई करना चाहिए। अंतिम जुता. ई से पूर्व एक एकड़ खेत में जिंक सल्फेटः 10 कि0ग्रा0, अवध शक्तिः 10 बोरा, ट्राईकोडरमाः 2 कि0ग्रा0, पी0एस0बी0: 2 कि0ग्रा0, एजोटोबैक्टरः 2 कि0ग्रा0 डालें, इससे भूमि की उर्वराशक्ति लम्बे समय तक बनी रहती है।

गन्ने की बुआई विधिः

रोपनी की मुख्यतः तीन विधियाँ है।

1. सिराउर
2. ट्रेंच
3. जोड़ी पंक्ति

इन विधियों में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 90 से0मी0 (3 फीट) रखी जाती है। सिराउर और जोड़ी पंक्ति विधि में रीजर से सिराउर बना ली जाती है। जोडी पंक्ति विधि में बनाए गए

सिराउर में कुदाल से साफ कर सिराउर की चौडी 20 से0मी0 कर ली जाती है। ट्रेंच विधि में कुदाल से 30 से0मी0 गहरी और 30 से0मी0 चौडी नाली खोद ली जाती है। सिराउर और ट्रेंच विधि में गुल्लियों को सिरा से सिरा मिलाकर बिछाया जाता है। गुल्ली बिछाने के पहले उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा सिराउर नाली में डाल देनी चाहिए। नोटः गन्ना बुआई के बाद कूडों में केवल 2–3 इंच मिटटी डाले ज्यादा मिटटी डालने से गन्ना का जमाव प्रभावित होगा।

उर्वरक एवं कीटनाशीः

बुवाई के समय निम्न उर्वरक एवं कीटनाशी प्रति एकड़ की दर से गन्ने के कूड़ों में डालेंः डी0ए0पी0– 75 किग्रा0, एम0ओ0पी0– 50 किग्रा0, यूरिया– 25 किग्रा0, सल्फर– 10 कि.ग्रा., रिजेन्टे–8 कि.ग्रा. या कैफैडीस– 80 ग्राम, माईक्रोन्यूट्रीएन्ट– 5 ग्राम प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाईः

शरदकालीन रोप में 6–7 एवं बसंतकालीन रोप में 4 से 5 सिंचाई की आवश्यकता पडती है। शरद रोप में पहली दो सिंचाई जनवरी से मार्च तक दी जानी चाहिए। उसके बाद दोनों रोप में आश्यकतानुसार तीन सप्ताह के अंतराल पर 4–5 सिंचाई देना आवश्यक है। जब तक मानसून की वर्षा शुरू नहीं हो जाती है प्रत्येक सिंचाई के बाद दो पंक्तियों के बीच में पंचफारा या देशी हल से अंतरकर्षण करते रहना चाहिए। शरद रोप में दूसरी सिंचाई के बाद जबकि बसंत रोप में पहली सिंचाई के बाद अंतरकर्षण करते समय यूरिया का प्रथम उपरिवेशन कर देना चाहिए। इस समय सिराउर विधि में 88 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर और ट्रेंच एवं जोडी पंक्ति विधि में 100 किलोग्राम यूरिया प्रति हे0 के दर से देना चाहिए।

निकाई गुडाईः

ईख रोप के 45 दिनों के बाद पूरे खेत से अच्छी तरह खरपतवार खुरपी द्वारा निकाल देना चाहिए। खरपतवार अधिक हो तो आवश्यकतानुसार एक बार पंक्ति के अंदर भी घास निकालना लाभप्रद होता है।

खरपतवार नियंत्रणः

खरपतवार नियंत्रण के लिए तृणनाशी दवा का व्यवहार कर सकते है। एट्राजीन 2.5 कि0ग्रा0/हे0 700–800 लीटर पानी में घोलकर ईख रोप के 3 दिन के अंदर छिडकाव करने से खरपतवार का नियंत्रण होता है। इसके अलावा 2,4–डी0 खरपतवारनाशी का 1.25 कि0ग्रा0 दवा/हे0, 800 लीटर पानी में घोलकर ईख रोप के 50–60 दिन बाद छिड़काव करना चाहिए। मई के मध्य में एक गुडाई करने पर खरपतवार नियंत्रित हो जाता है।

मिटटी चढाना व स्तंभन करनाः

बरसात का मौसम प्रारंभ होने के पहले ही यानी जून के तीसरे सप्ताह में यूरिया का द्वितीय उपरिवेशन सिराउर विधि में 88 कि0ग्रा0 और ट्रेंच एवं जोड़ी विधि में 100 कि0ग्रा0 यूरिया/हे0 और फयुराड़ान कीटनाशी का 33 कि0ग्रा0/हे0 की दर से देकर रीजर से मिटटी चढ़ाना चाहिए। ईख फसल को गिरने से बचाने के लिए अगस्त से मध्य सितंबर तक आमने सामने का पंक्तियों के ईख को एक दूसरे की तरफ झुकाकर उसी गन्ने की हरी और सुखी पतियों को एकांतर श्रृखला में बॉध देना चाहिए। इसका मुल मंत्र हैः

"गन्ने की उपज बढाना है
गन्ने को गिरने से बचाना है"

कटाईः

गन्ने की कटाई जमीन की सतह से सटा कर करना चाहिए। अगात प्रभेदों की कटाई 15 नवंबर तथा मध्य पिछात प्रभेदों की कटनी जनवरी के प्रथम सप्ताह से करनी चाहिए।

ईख खेती है व्यवसाय,
मिलती इससे अच्छी आय
अवश्य अपनायें गहन प्रणाली,
घर में हो खुशहाली